IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय संस्कृति एवं संगीत

Kajal singh

Research Scholar

Reg. No- 201019020

Department of Music

Shri JJT University

Vidhyanagri, Jhunjhunu

Rajasthan 333010

Dr. Ranjana Saxena

Associate Professor

Reg.No-JJT/2K9SSH/1852

HOD Department of Music

Shri JJT University

Vidhyanagri, Jhunjhunu

Rajasthan 333010

Abstract-

भारत एक विशाल देश है यहां की सभ्यता एवं संस्कृति अत्यंत प्राचीन है यहां की संस्कृति की अनेक विशेषताओं, सिद्धांतों के कारण ही भारत को एक गरिमामय स्थान प्राप्त है। यह स्वाभाविक है कि कलाएं किसी भी देश की संस्कृति का आधार होती है। संस्कृति के विरुद्ध जाने वाली कलाओं को उस देश के निवासी स्वीकार नहीं करते हैं किसी भी देश की कलाएं उस देश की आत्मा होती है। उस देश में विकसित हुई संस्कृति की झलक स्पष्ट रूप से हमें वहां की कलाओं में दृष्टिगोचर होती है। बोलचाल की भाषा में सभ्यता और संस्कृति ये दोनों शब्द साथ-साथ प्रयुक्त किए जाते हैं। सभ्यता जहां शरीर है वहीं संस्कृति उस जगह की आत्मा है। सभ्यता किसी भी स्थान के व्यक्ति के बाह्य रूप को प्रकट करती है, जबकि संस्कृति उस व्यक्ति के आचार विचार और संस्कारों का वर्णन करती हैं। सभ्यता का विकास मूलतः भौगोलिक वातावरण तथा ऐतिहासिक अनुभवों पर निर्भर होता है। इसका रूप समय के साथ साथ बदलता रहता है।

Key words- भारत, संस्कृति, ललित कलाएं, ठुमरी, संगीत

संस्कृति समाज का दर्पण होती है और कलाएं संस्कृति का दर्पण माने जाते हैं संगीत एक कला है अतः उसने संस्कृति की झलक उसकी मान्यताएं परंपराएं और अनुरूपता का वहन होना ही चाहिए। भारतीय संस्कृति चाहे वैदिक कालीन हो अथवा मध्यकालीन या उत्तर कालीन कुछ अपरिवर्तनीय आदर्श उसमें प्राप्त होते हैं यह आदर्श ही भारतीय संस्कृति की विशेषताएं हैं।

किसी भी देश की संस्कृति की झलक हमें वहां के सामाजिक परिवेश, मान्यताओं, साहित्य, संगीत, कला आदि अंगों में प्राप्त होती है। धर्म शास्त्रों में मानव जीवन की धार्मिक व्यवस्थाओं को स्थापित किया जाता है जिसके कारण व्यक्ति एवं समाज को अनुशासित करके उन्नति की ओर ले जाना संभव होता है। भारतीय धर्म शास्त्रकारों ने मनुष्य के रूप में विचारों से स्थूल कर्म तक को एक ऐसे स्वर्णिम सूत्र में पिरोया है जिससे जीवन के सार्वभौमिक विकास को गति प्राप्त होती है।

यदि ध्यान से देखा जाए तो मानव समाज की व्यष्टिमय एवं समष्टिमय समस्त उपलब्धियां संस्कृति के अंतर्गत ही आती हैं। संस्कृति मानव चेतना का एक ऐसा विकास क्रम है जो उसके अंतरंग एवं बहिरंग पूर्ण रूप से परिष्कृत करके एक विशेष जीवन पद्धति का सृजन करता है। संस्कृति के द्वारा ही मनुष्य जाति में सर्वोत्तम मानसिक एवं सामाजिक गुण उत्पन्न होते हैं जिससे मानवता का संस्कार शिक्षा- दीक्षा रहन-सहन और परंपराएं सब उद्घाटित होता है। संस्कृति एक विरासत होती है जो कि निरंतर संचय से विकसित होती रहती है। भारतीय संस्कृति में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों अंगों पर भी समान रूप से ध्यान दिया गया है इनके द्वारा शैशव काल से ही मानव जीवन को पवित्र बनाने की व्यवस्था की गई है।

कलाओं के द्वारा केवल सौंदर्य बोध की अभिव्यक्ति ही नहीं होती अपितु ये समग्र रूप से जीवन के यथार्थ, मानवीय चिंतन, व्यक्ति और देश की पहचान को भी मूर्त रूप प्रदान करती हैं। यह कहा जा सकता है कि संगीत में भारतीय संस्कृति के आदर्शों मान्यताओं एवं विचारों को उचित स्थान दिया गया है।

ललित कलाएं एवं संगीत

व्यक्ति अथवा राष्ट्र के सौंदर्य बोध की अभिव्यक्ति कला के ही माध्यम से होती है, परंतु कला का एकमात्र संबंध सौंदर्य बोध से नहीं हो सकता। कला से सदैव ही सौंदर्य बोध की अभिव्यक्ति नहीं होती है यह समय समय पर जीवन के यथार्थ, मनुष्यों के चिंतन, व्यक्ति और देश की पहचान को मूर्त रूप देती है। ललित कलाएं पांच मानी जाती हैं।

1.चित्र कला

2.साहित्य कला

3.वास्तुकला

4.संगीत कला

5.मूर्ति कला

इन सभी कलाओं में संगीत को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है क्योंकि अंकन चाहे वह वाग विलास के क्षेत्र में हो चाहे रंगों और रेखाओं के संबंध में या वास्तुशिल्प, वह सब कला ही होती है।

कलाओं के दो प्रकार माने गए हैं-

1. स्थिर कलाएं 2. गतिशील कलाएं

वास्तुकला, मूर्तिकला एवं चित्रकला को स्थिर कलाओं के अंतर्गत माना गया है तथा काव्य कला और संगीत कला को गतिशील कलाओं के अंतर्गत रखा गया है। ललित कलाओं में संगीत को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है भारतवर्ष में संगीत कला की परंपरा वैदिक युग से ही निरंतर चली आ रही है सामान्यतया संगीत कला के तीन पक्ष माने गए हैं गायन, वादन और नृत्य नाट्य कला में भी संगीत कला का प्रयोग किया जाता था। भरत मुनि ने अपने नाट्यशास्त्र ग्रंथ में संगीत को भावों की अभिव्यक्ति का साधन माना है।

प्राचीन काल से ही संगीत का संबंध धर्म तथा आध्यात्मिकता के साथ माना गया है। संगीत न केवल मनोरंजन का साधन था अपितु मानव के मस्तिष्क के विकास के लिए तथा आध्यात्मिक विकास का प्रयोग किया जाता था।

भारतवर्ष की पावन धरा पर संगीत साधकों का गौरव मय इतिहास वर्णित है। वैदिक काल में महर्षि तुंबरू, देवर्षि नारद, आदि का वर्णन प्राप्त होता है। संगीत में हमे शिव मत, कल्लीनाथ मत, हनुमत मत आदि मतों के नाम से राग रागिनियां प्राप्त होती हैं।

वैदिक साहित्य में हमें अनेक ऐसे उदाहरण प्राप्त होते हैं जिनसे पता चलता है कि गृहस्थ कार्यों के अतिरिक्त महिलाओं को संस्कृति के विभिन्न अंगों की शिक्षा भी दी जाती थी जिनमें संगीत एवं नृत्य आदि विशेष महत्वपूर्ण थे। ऋग्वेद में गायन करती हुई स्त्रियों का भी वर्णन प्राप्त होता है। सदैव से ही संगीत का नृत्य के साथ घनिष्ठ संबंध रहा है अतः संगीत विषय में रुचि रखने वाले व्यक्तियों को निश्चित रूप से दोनों कलाओं की शिक्षा साथ साथ ही दी जाती रही होगी। ऋग्वेद में कई स्थानों पर नृत्य करती हुई कुशल स्त्रियों का उल्लेख ही प्राप्त होता है। संगीत मानव के अवचेतन मन पर ऐसा प्रभाव डालता है कि व्यक्ति अपनी सुध बुध तक भी खो देता है। संगीत कला अपने गतिशीलता के कारण ही सर्वमान्य है। संगीत को सुनकर, देखकर अथवा स्वयं अपना कर व्यक्ति आनंद प्राप्त कर सकता है।

गायन, वादन तथा नृत्य तीनों को मिलाकर ही संगीत नाम दिया जाता है।

गायन -

गायन के लिए संगीत के ग्रंथों में गीत की संज्ञा दी गई है। नृत्य और वादन के साथ किया गया गीत ही संगीत कहलाता है। संगीत को प्राचीन भारत में इतना अधिक महत्व प्राप्त था कि नाद को ही ब्रह्म भी कहा गया है। भारतीय संगीत की परंपरा के अंतर्गत राग रागिनियों के जन्मदाता शंकर भगवान को ही माना जाता है ।कहा जाता है कि आर्यों को संगीत के प्रति इतनी रुचि थी कि उन्होंने सामवेद की रचना की। वैदिक काल में यज्ञ आदि अवसरों पर गीतों का गायन होता था। साम गायन में देवी शक्ति का निवास माना गया है।

साम गायक वीणा बजाकर गायन करते थे। यज्ञों में ना केवल वीणा का प्रयोग किया जाता था। यजमानों की पत्नियां भी वीणा वादन करती थी तथा साथ ही गायन भी करती थी। विभिन्न मांगलिक अवसरों पर भी वीणा वादन और गायन किया जाता था।

वाद्य वादन- गायन हो या नृत्य दोनों की सुंदरता को बढ़ाने के लिए वादियों द्वारा संगति की जाती है प्राचीन काल से ही संगीत कला में वादियों का एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है ऋग्वेद में चार प्रकार के वाद्य यंत्र बताए गए हैं।

1. तत 2. अवनद्ध 3. सुषीर 4. घन

इन सभी वाद्यों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वीणा एक लोकप्रिय वाद्य था जो आज भी प्रचलित है। वीणा तत वाद्यों की श्रेणी में आता है। तेतरीय ब्राह्मण में दिन में वीणा बजाने तथा रात्रि में भी वीणा बजाने का उल्लेख मिलता है।

नृत्य- नृत्य कला का वर्णन पुराणों में विशिष्ट रूप से प्राप्त होता है। महाभारत में कृष्ण और गोपियों के महारास का वर्णन तो सर्व विदित है। सामान्यतया नृत्य अप्सराओं एवं कुल वधुओ के द्वारा ही प्रस्तुत किया जाता था। नृत्य का संबंध धर्म से मानते हुए, ईश्वर को प्रसन्न करने का साधन माना गया है तथा ऐसा वर्णन प्राप्त होता है कि मांगलिक अवसरों पर कन्या और कन्या की सखियां कुशल संगीतज्ञ के साथ मिलकर नृत्य, गायन, वादन प्रस्तुत करते थे।

वेद कालीन साहित्य से ज्ञात होता है कि गीत और नृत्य में निपुण स्त्रियों का एक वर्ग था जिन्हें अप्सरा कहा जाता था। नाट्य शास्त्र में भी नाटक की सफलता के लिए ब्रह्माजी द्वारा अप्सराओं के नृत्य गान का उल्लेख है। धीरे धीरे अप्सराओं की स्वतंत्र श्रेणी बन गई थी ।जब नगरों का विकास हुआ और नगरों का गठन हुआ तब नर्तकियां सर्वगुण संपन्न समझी जाती थी और उन्हें गणिका भी कहा जाता था।

संगीत में नायक एवं नायिका का महत्त्व-

संगीत में जब हम रस के विषय में चर्चा करते हैं तब आलंबन, आश्रय, भाव, विभाग, अनुभाव, संचारी भाव आदि की चर्चा होती है। आश्रय तथा आलंबन का संबंध नायक और नायिका से ही माना जाता है तथा अनुभाव भी उन्ही में उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार नायक और नायिका की चर्चा रस से ही जुड़ी हुई है। श्रृंगार निरूपण, संयोग श्रृंगार एवं वियोग श्रृंगार में नायक और नायिका का ही विशेष महत्व माना गया है। भरत मुनि ने अपने ग्रंथ नाट्यशास्त्र के 22 में अध्याय में नायक और नायिकाओं के भेदों एवं उपभेदों की विस्तृत चर्चा की है। नायक और नायिका के इन प्रकारों का संगीत के क्षेत्र में क्या स्थान है? संगीत से इनका क्या संबंध है? तथा हमें संगीत के विभिन्न प्रकारों में किस रूप में नायक और नायिका का वर्णन प्राप्त होता है?

नायक के प्रकार-

1.धीरोदात्त- शोक, क्रोध, भय आदि मानसिक विकारों से रहित तथा स्थिर चित्र रहने वाला धीरोदात्त नायक कहलाता है। धीरोदात्त नायक अपने निश्चय पर अटल रहता है।

2.धीरोद्धत- हर्ष एवं ईर्ष्या से भरा हुआ, माया व कपट का आश्रय लेने वाला, अभिमानी, चंचल तथा क्रोधी स्वभाव वाला नायक धीरोद्धत नायक कहलाता है।

3.धीर ललित- निश्चिंत रहने वाला, सुखी, कोमल स्वभाव वाला तथा कलाओं में आसक्त रहने वाला नायक धीर ललित नायक कहलाता है।

4.धीर शांत- जिस नायक में सभी गुणों का समावेश सामान्य रूप से हो उसे भी धीर शांत नायक कहते हैं।

नायिका के भेद-

1.स्वकीया नायिका- लज्जा, शील सच्चरित्र, व्यवहार कुशलता आदि गुणों से युक्त इन नायिकाओं के तीन प्रकार माने जाते हैं-1. मुग्धा 2. मध्या 3. प्रगल्भा।

2.परकीया नायिका- अर्थात् अन्य स्त्री। यह नायिका अविवाहित स्त्री अथवा किसी की परिणीता स्त्री हो सकती है।

3.सामान्य अथवा साधारण नायिका- यह सामान्य स्त्री होती है।

नायिका की अवस्थाओं के भेद के आधार पर भरत मुनि में नायिकाओ के 8 प्रकार बताए हैं।

1.स्वाधीन पतिका- जिसका प्रियतम उसके पास हो तथा वह अत्यंत सुख का अनुभव करती हो, ऐसी नायिका स्वाधीनपतिका नायिका मानी गई है।

2.वासक सज्जा- प्रिय के आगमन की प्रतीक्षा में स्वयं श्रृंगार करने वाली नायिका को वासक सज्जा नायिका कहा गया है।

3.विरहोत्कंठिता- प्रियतम के अपराधी होने पर भी, उसके पास ना आने पर प्रतीक्षा करने वाली नायिका।

4.खंडिता- नायक के द्वारा किसी दूसरी स्त्री से प्रेम प्रदर्शित करने पर दुखी होने वाली नायिका खंडिता नायिका कही गई है।

5.कल्हांतरिता- नायक के द्वारा अपराध करने पर क्रोध वर्ष पहले तो उसका तिरस्कार करती है तथा बाद में स्वयं पश्चाताप करती है ऐसी नायिका को कल्हांतरिता नायिका कहा गया है।

6.प्रोषित प्रिया- जिसका प्रियतम किसी दूसरे देश में निवास करें तथा वह विरह से पीड़ित रहे, ऐसी नायिका को प्रेषित प्रिया नायिका कहा गया है।

7.विप्रलब्धा- नायक द्वारा इंगित स्थान पर ना पहुंचने पर अपने को तिरस्कृत समझ कर दुखी होने वाली नायिका विप्रलब्धा नायिका कही गई है।

8.अभिसारिका- काम भावना से पीड़ित होकर नायक के पास अभिसार करने के लिए जाने वाली नायिका को अभिसारिका नायिका कहा गया है।

उपशास्त्रीय गायन शैली ठुमरी में प्रियतम के किसी दूर देश में रहने के कारण अपनी पत्नी से ना मिल पाना तथा पत्नी के मन की व्यथा, रूठना, मनाना, शिकायत, मिलन की खुशी आदि का समावेश होता है। यहां तक कि ख्याल गायन शैली में भी नायक-नायिका के विरह एवं प्रेम का वर्णन प्राप्त होता है यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि कंठ संगीत में काव्य के शब्द होते हैं और उन शब्दों की अभिव्यक्ति स्वरों के माध्यम से संगीतकार करते हैं। संगीत की बहुत सी बंदिशों में विरहिणी नायिका के अनेक रूप प्राप्त होते हैं।

Reference-

a 1.Master Musicians of India - Regula Qureshi Edition 1st Edition First Published 2007 E Book Published 27 April 2016 Pub. Location New York ISBN-9780203940921

2.Ṭhumrī in Historical and Stylistic Perspectives - Peter Manuel Publisher Motilal Banarsidass Publ., 1989 ISBN 8120806735,

3. गिरिजा - यतींद्र नाथ मिश्र प्रकाशक: वाणी प्रकाशन काशित वर्ष:2016 आईएसबीएन:978-93-5072-484

4. भारत के नगरों की कहानी- भगवत शरण उपाध्याय प्रकाशन राजपाल एंड संस

5. भारत के सांस्कृतिक केंद्र- वाराणसी उमा पांडे प्रकाशन द मैकमिलन कंपनी ऑफ़ इंडिया लिमिटेड, दिल्ली प्रथम संस्करण 1980

6. भारतीय संगीत का इतिहास- ठाकुर जयदेव सिंह संगीत रिसर्च अकैडमी, कोलकाता, प्रकाशन वर्ष 1994

7. बना रहे बनारस -विश्वनाथ मुखर्जी विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी प्रथम संस्करण 1958